वर्ष..2024-25

‘पंच गौरव’

कार्यक्रम

थेंवा कला

कलौंजी

सीता माता
अभ्यारण

तेंदू

तीरंदाजी

जिला प्रशासन प्रतापगढ़ (राज0)

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

विषय सूची

1.	प्रस्तावना	1
2.	कार्यक्रम के उद्देश्य	6
3.	कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु जिला स्तरीय समिति	7
4.	जिला स्तरीय समिति के कार्य	8
5.	अनुमत कार्य	9
6.	उत्पाद के विकास हेतु	10
7.	पर्यटन स्थल के विकास हेतु	11
8.	खेल के विकास हेतु	12
9.	बजट (Resource Envelope)	13
10.	एक जिला एक उपज	14
11.	एक जिला एक वनस्पति	16
12.	एक जिला एक उत्पाद	18
13.	एक जिला एक पर्यटन	22
14.	एक जिला एक खेल	27
15.	वित्तीय प्रस्ताव एवं विस्तृत कार्य योजना	31

प्रस्तावना

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है। प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में ''पंच–गौरव'' कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए ''पंच गौरव'' के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक उपज, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला– एक खेल एवं एक जिला–एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए जाएगें।

जिला प्रतापगढ़

राज्य	राजस्थान, भारत
प्रशासनिक प्रभाग	उदयपुर सम्भाग(यह 160 किलोमीटर दूर है)
मुख्यालय	**प्रतापगढ़, राजस्थान**
क्षेत्रफल	4,117.36 किमी^{2}(1,589.72 वर्ग मील)
जनसंख्या	8,67,848 (2011के अनुसार)
जनसंख्या घनत्व	211 /किमी^{2}
शहरी जनसंख्या	42079
साक्षरता	56.30 (2011 में)
प्रमुख सड़कें	एनएच 113 (राष्ट्रीय राजमार्ग ११३)

प्रतापगढ़ जिला एक दृष्टि में

एक परिदृश्य

प्रतापगढ़ क्षेत्रफल में भारत के सबसे बडे राज्य राजस्थान के मानचित्र पर 33 वें जिले का गौरव 26 जनवरी 2008 को अर्जित करने वाला यह जिला पूर्व में उदयपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ जिलों में समाहित क्षेत्रों से निर्मित हुआ है। नवसृजित प्रतापगढ़ जिले के तहत चित्तौड़गढ जिलें की अरनोद, प्रतापगढ, छोटीसादड़ी, उदयपुर जिले की धरियावद एवं बांसवाड़ा जिले के पीपलखुंट क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। समग्र जिले का क्षेत्रफल 4117.36 वर्ग किलोमीटर है।

कॉठल के नाम से लोकप्रिय, प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित वागड़, मेवाड़ एवं मालवा की जीवनशैली का संगम, नया जिला है, जो राजस्थान के मानचित्र में दक्षिण भाग में अवस्थित है । प्रमुखतः कृषि जीवन यापन करते, जनजाति बाहुल्य इस जिले की अपनी समृद्ध गंगा–जमुना संस्कृति है। यहा सभी धर्मो,मतों एवं आस्थाओं के लोग

ऐतिहासिक दृष्टि से यहॉ मेवाड़ राजवंश के राजाओं का आधिपत्य रहा है, जो इतिहास में देवलिया राज्य के नाम से सुविख्यात रहा है जिसकी राजधानी प्रतापगढ़ से पश्चिम की और 10 किमी. दूर देवलिया कस्बा रहा था। यहां प्राचीन राजघराने के ऐतिहासिक अवशेष उपलब्ध है। स्वतंत्र राजस्थान में देवगढ़ के तत्कालिन शासक महारावल प्रतापसिंह ने अपने नाम से प्रतापगढ़ नगर की स्थापना की, जिसके चहुंओर परकोटा निर्मित है। स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात् सन् 1948 से 1952 तक प्रतापगढ़ जिला मुख्यालय रहा है परन्तु राज्यों के पुर्नगठन प्रशासनिक एवं राजनैतिक कारणों से मुख्यालय परिवर्तित कर दिया गया । अब 26 जनवरी 2008 को पुनः इसे जिला बनने का गौरव मिला जिससे इस जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में विकास की गंगा बहेगी ।

सांस्कृतिक विरासत में यहॉ हिन्दू एवं जैन मतावलम्बियों के प्राचीन मन्दिरों की बहुलता है। सामुदायिक सौहार्द्र की प्रतीक काका साहब की दरगाह बोहरा समाज की आस्था का केन्द्र ही नही अपितु सर्वसमाज की श्रृद्धा का केन्द्र है। प्रतापगढ़ से 4 किमी. दूरी पर अवस्थित अम्बामाता प्रमुख शक्ति पीठ है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से क्षेत्र में गौतमेश्वर तीर्थ स्थल जन आस्था का केन्द्र है। इसके साथ नीलकंठ महादेव,

सालमगढ़ का शिव मन्दिर, प्रागैतिहासिक कमलेश्वर महादेव , अवलेश्वर में प्राचीन कनिष्क कालिन शिलालेख पाये गये है। घोटारसी सूर्य मंदिर, जूनागढ़ का पुरातन किला, छोटीसादड़ी का भ्रामरीदेवी पुरातन दर्शनीय स्थल है। विश्वप्रसिद्व सीतामाता का अभ्यारण तकरीवन क्षेत्रफल में फेला हुआ है। वन सम्पदा व अनूठी प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित यह वन सम्पदा अपने आपके अनूठी विरासत है। यहा प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुठी मिसाल है।

प्रतापगढ़ की थेवा कला का विश्व में सानी नहीं है। इस कला को विश्व के हस्तशिल्प मानचित्र में राजसोनी परिवार ने स्थान दिलाया है। थेवा कला में कांच पर सोने की नक्काशी चित्रकारी की जाती है। जिसमें विविध हरे, लाल, पीले, नीले रंग प्रयुक्त किये जाते है। यहां काष्ठ, कांच के अदभूत एवं संजीव खिलौने बनाने के कारीगर है परन्तु कला संरक्षण के अभाव में विलुप्त होने की कगार पर है । प्रतापगढ़ की हींग, आम के पापड़, आम का आचार, जीरावन एवं गरम मसाले देश भर में लोकप्रिय है।

भौगोलिक स्थिति :–प्रतापगढ़ जिला समुद्र तल से औसतन 1610 फीट की ऊॅचाई पर बसा है और **ऊॅचाई की दृष्टि** से राजस्थान में माउन्ट आबू के बाद सर्वाधिक ऊॅचाई वाला जिला है । स्थानीय जलवायु समशीतोष्ण है । भारतीय उपमहाद्वीप की सर्वाधिक प्राचीन पर्वतमाला अरावली और मालवा के पठार की संधि पर अवस्थित राजस्थान के इस जिले के भूगोल में अरावली और मालवा दोनो की ही भौगोलिक विशेषताऍ एक साथ पहचानी जा सकती है । प्रतापगढ़ जिला राजस्थान के दक्षिण भाग में मध्यप्रदेश के नीमच व मंदसौर जिलों से लगा हुआ है। राजस्थान के उदयपुर, बांसवाड़ा व चित्तौड़गढ़ की सीमाएं स्थित है ।

क्र.स.	विवरण	ईकाई	संख्या
1.	**भौगोलिक क्षैत्रफल**	हैक्टेयर	411736
2.	**उपखण्ड**	संख्या	06
3.	**तहसील**	संख्या	07
4.	**उप–तहसील**	संख्या	03
5.	**भू–अभिलेख निरीक्षकवृत्त**	संख्या	47
6.	**पटवार मण्डल**	संख्या	216
7.	**कुल आबाद गांव**	संख्या	996
8.	**कुल गैरआबाद गांव**	संख्या	25
9.	**कुल राजस्व गांव**	संख्या	1021
10.	**पंचायत समिति**	संख्या	08
11.	**कुल ग्राम पंचायत**	संख्या	233
12.	**नगर पालिका संख्या**	संख्या	03
13.	**नगर परिषद संख्या**	संख्या	01

PRATAPGARH DISTRICT, RAJASTHAN
CHOOTI SADRI
PRATAPGARH
DHARIAWAD
PEEPALKHOONT
ARNOD
Legend
District Boundary
Tahsil Boundary
Road
Major Villages
Towns (Census 2001)
River
INDEX: PRATAPGARH DISTRICT
PRATAPGARH

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

कंलोजी → तेंदू → थेवा आभूषण → सीतामाता → तीरंदाज

जिला स्तरीय समिति

जिले में विभागो के साथ समन्वय एवं पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के संवर्धन व विकास हेतु जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु श्रीमान जिला कलक्टर महोदया की अध्यक्षता में निम्नानुसार समिति का गठन किया गया :–

क्र.सं	अधिकारी	पद
1.	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2.	उपवन संरक्षक, वन एवं पर्यावरण विभाग, प्रतापगढ़	सदस्य
3.	महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र, प्रतापगढ़	सदस्य
4.	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग प्रतापगढ़	सदस्य
5.	उप निदेशक, उद्यान विभाग, प्रतापगढ़	सदस्य
6.	जिला खेल अधिकारी, खेल एवं युवा मामलात विभाग प्रतापगढ़	सदस्य
7.	सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग,	सदस्य
8.	जिला कोषाधिकारी, कोष कार्यालय, प्रतापगढ़	सदस्य
9.	जिला सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग प्रतापगढ़	सदस्य
10.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, प्रतापगढ़	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्य

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिलें में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यो पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव–जिला पुस्तिका तैयार करना।

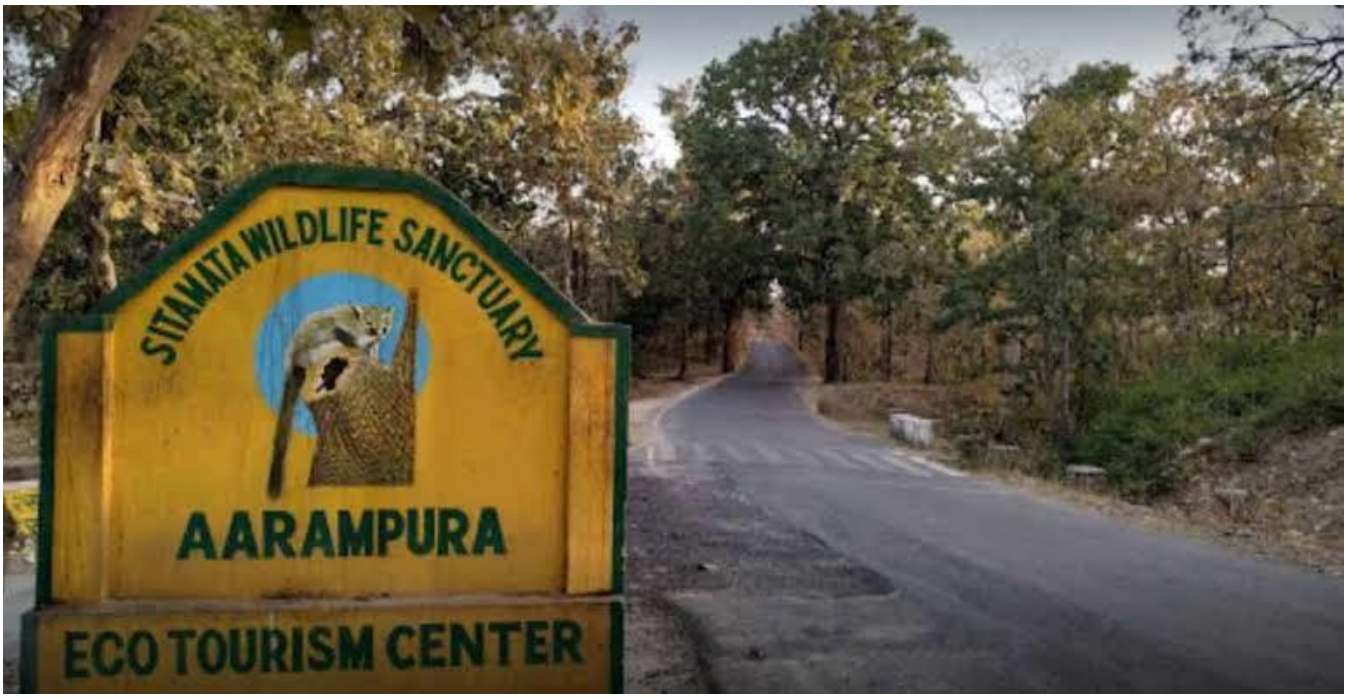

अनुमत कार्य

उपज एवं वनस्पति प्रजाति (Produce & Botanical Species)के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	संग्रह, भंडार, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग, ड्राईंग, प्रसंस्करा सुविधाएं और कोल्ड सप्लाई चेन संरचनाओं का उन्नयन।
2	आबादी को बाजार से जोड़ने के लिए सड़कों, स्ट्रीट बिजली की व्यवस्था, रास्तों पर पेयजल, वॉशरूम, साइनेज, कूड़ेदान, पार्किंग के साथ–साथ मुख्य स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे आदि की व्यवस्था।
3	क्रेता–विक्रेता बैठकों, व्यापार मेलों, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन करके बाजार की उपलब्धता।
4	नई प्रौद्योगिकियों, उन्नत कृषि तकनीकों और नवीनतम Package of Practic मे के उपयोग से उपज और लाभ बढ़ाने के प्रयास (pilot)के साथ ही प्रशिक्षा.ा देना।
5	उत्पादों के GI-tagging, brand building, product packaging, retail and online advertising के लिए सहायता और IEC, विशेषतः ODOP (One District One Product) कार्यक्रम के तहत चयनित उत्पादों के लिए।
6	स्थानीय किसान बाजारों, मेलों और त्योहारों में स्थानीय उपज की ब्रांडिंग और बिक्री के लिए प्रयास।
7	स्थानीय महिला स्वयं सहायता समूहों (WSHGs) का क्षमतावर्धन।
8	स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान चलाना।

उत्पाद (Product)के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	बाजार/मंडी में आवश्यक बुनियादी ढांचे, सड़कें, बिजली, जल उपचार, सीवेज उपचार, अपशिष्ट उपचार, पाइप्ड गैस आपूर्ति, गोदाम, लॉजिस्टिक्स, पावर बैक अप, स्ट्रीट लाइटिंग, साइनेज, पार्किंग, सीसीटीवी कैमरे आदि का विकास।
2	प्रदर्शनी–सह–सम्मेलन केंद्रों, निर्यात घरों और निर्यात सुविधा केंद्रों की जानकारी की उपलब्धता और IEC।
3	पारंपरिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय शिल्प और हस्तशिल्प क्लस्टर निर्माण।
4	राष्ट्रीय प्लेटफार्मों जैसे ONDC, GeM, इंडिया बिजनेस पोर्टल आदि पर शामिल होने के लिए MSME`को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करना।
5	खरीददार–विक्रेता बैठकों, व्यापार मेलों और राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन।
6	डिजिटल बाजार संबंधों का विकास और डिजिटल मार्केटिंग।

पर्यटन स्थल (Tourist Destination)के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	पर्यटकों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना– प्रमुख पर्यटक स्थलों पर अनिवार्य बुनियादी ढांचे का विकास, सड़क संपर्क में वृद्धि, सूचना केंद्र, पेयजल कियोस्क, शौचालय, प्रकाश व्यवस्था, व्यक्तिगत लॉकर, साइनेज, कूड़ेदान, पार्किंग, सीसीटीवी कैमरे आदि।
2	बस स्टैंड और बाजारों में पर्यटकों के लिए सेवाओं/सुविधाओं का उन्नयन।
3	प्रमुख पर्यटक स्थलों के आसपास थीम–आधारित अनुभवात्मक (स्वयं करने योग्य) गतिविधियों–खानपान, सांस्कृतिक, मनोरंजन आदि का विकास।
4	भएंकर डेस्टिनेशन के आसपास वार्षिक कैलेंडरीकृत कार्यक्रमों का आयोजन, जैसे मैराथन, संगीत या फिल्म समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि।
5	एनालॉग/डिजिटल प्म्ब के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक मीडिया में अतुल्य राजस्थान को बढ़ावा देना।
6	जिले के प्रतिष्ठित स्थानों/स्मारक/पैनोरमा पर स्थानीय किंवदंतियों/विरासत पर आधारित एक भव्य ब्रॉडवे शैली सांस्कृतिक शो का आयोजन

खेल (Games) के विकास हेतु

क्र.स.	कार्य
1	जिले के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन ।
2	खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्कूलों व कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित करना।
3	जिले के चयनित खेल के अनुसार खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करना।
4	आवश्यकतानुसार खिलाडियों को आवास और पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवासीय सुविधाएं प्रदान करना।
5	खेलों से संबंधित आवश्यक जानकारी (सुविधाओं, आयोजनों, खिलाड़ियों को सहायता आदि) ऑनलाइन और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर उपलब्ध कराना।

गैर अनुमत कार्य

- वाहनों एवं कार्यालय के लिए फर्नीचर, उपकरणों आदि की खरीद जैसे व्यय।
- आवर्ती व्यय या भविष्य की देनदारियों को आमंत्रित करने वाले कार्य।
- व्यक्तिगत लाभ के कार्य।
- ऋण चुकाना, बकाया का निपटान, भूमि की खरीदारी, मुआवजे का भुगतान।
- आई टी सिस्टम, पोर्टल के विकास संबंधित कार्य।
- पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली गतिविधियां।
- विज्ञापन व्यय।

बजट (Resource Envelope)

नोडल विभाग का बजट

राज्य स्तर पर एक जिला एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेंगे। संबंधित नोडल विभाग पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिले के विशेष घटकों के कार्यान्वयन के लिए अपने स्वयं के बजट का उपयोग करेंगे।

अभिसरण (Convergence)

विभागों की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से ही जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की गतिविधियों का वित्त पोषण प्राथमिकता से किया जायेगा। जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों, योजनाओं और विभागों में उपलब्ध संसाधनों के अभिसरण से कार्य कराये जायेगें। इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD, संयुक्त राष्ट्र संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IFI), गैर सरकारी संगठनों, CSR फाउंडेशन, उद्योग संघों का सहयोग राजस्थान के जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम के कार्यान्वयन को वित्त पोषित करेंगे।

जिलेवार चिह्नित पंच गौरव

उपज	वनस्पति प्रजाति	उत्पाद	पर्यटन स्थल	खेल
कलोंजी	तेंदू	थेवा आभूषण	सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण	तीरंदाजी

एक जिला– एक उपज

कलौजी फसल

राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2024–25 में पंच–गौरव कार्यक्रम का शुभारम्भ कर, राज्य के सर्वांगिण विकास हेतु क्रियान्वयन किया जा रहा है। प्रत्यैक जिले एवं क्षैत्र विशेष में विशिष्ठता के आधार पर उत्पादो/स्थलो का चयन कर, उनके संरक्षण, एवं विकास के द्वारा जिले को एक मजबुत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने के साथ–साथ जिलो के सर्वांगिण विकास हेतु राज्य में "पंच–गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत प्रतापगढ़ जिले की विरासत, पारस्थितिकी एवं कृषि जलवायु को ध्यान में रखते हुए "पंच–गौरव" कार्यक्रम के रूप में एक जिला–एक उपज के तहत **"कलौजी"** (Niglla sativa) फसल का चयन हुआ है। कलौजी फसल जो कि काला जीरा के नाम से जानी जाती है, इस फसल का पौधा छोटा लगभग 45 सेन्टीमीटर बड़ा होता है, और रबी मोसम में उगाया जाता है, जो कि लगभग 120–140 दिन की समय अवधि में पककर तैयार होती है।

कलौजी (काला जीरा) फसल का बीज जो कि बहुत छोटा होता है, को महगें मसाले एवं आयुर्वेदिक उत्पादो के रूप में उपयोग में लिया जाता है। इसकी उपयोगिता मध्यनजर निर्यात की काफी संभावना है।

फसल परीक्षण के आधार पर कलौजी फसल का संघटक–राख(Ash) 3.8–5.3 प्रतिशत, अघुलनशील अम्ल 0.0–0.5 प्रतिशत उर्धपतक (Volatile) तेल 0.5–1.6 प्रतिशत, इथर उत्पाद (Crude oil) 35.6–41.6 प्रतिशत एल्कोहलित अम्लीयता 0.4–6.3 पाई जाती हैं।

जिले मे कलौजी फसल की खेती विगत 15 से 20 वर्ष पूर्व से की जा रही है, परन्तु यह फसल तकनिकी खेती, बाजार भाव, फसल में किट बिमारियो की जानकारी का अभाव के

साथ–साथ प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियो आदि के कारण कृषको में लोकपिय नही हो सकी है जिसके परिणाम स्वरूप कलौजी की फसल जिले में नग्यन क्षेत्रफल में उगाई जा रही है । जिले में तकनिकी फसल उत्पादन, क्षेत्रफल विस्तार, तकनिकी भण्डारण एवं प्रसंस्करण गतिविधियो को बढावा देने की अति आवश्कता है। फसल की आर्थिक उपयोगिता के परिणाम

स्वरूप आशा की जाती है कि आगामी समय मे यह जिले की पहचान के रूप मे जानी जायेगी।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया

- एक जिला–एक उपज के तहत **"कलौंजी"** फसल का चयन हुआ है। कलौजी फसल जो कि काला जीरा के नाम से जानी जाती है, इस फसल का पौधा छोटा लगभग 45 सेन्टीमीटर बड़ा होता है, और रबी मोसम में उगाया जाता है, जो कि लगभग 120–140 दिन की समय अवधि में पककर तैयार होती है।
- कलौजी (काला जीरा) फसल का बीज जो कि बहुत छोटा होता है, को महगें मसाले एवं आयुर्वेदिक उत्पादो के रूप में उपयोग में लिया जाता है। इसकी उपयोगिता मध्यनजर निर्यात की काफी संभावना है।
- फसल परीक्षण के आधार पर कलौजी फसल का संघटक–राख 3.8–5.3 प्रतिशत, अघुलनशील अम्ल 0.0–0.5 प्रतिशत उर्धपतक तेल 0.5–1.6 प्रतिशत, इथर उत्पाद 35.6–41.6 प्रतिशत एल्कोहलित अम्लीयता 0.4–6.3 पाई जाती हैं।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रू में)

- जिले में बीज आपूर्ति, तकनिकी फसल उत्पादन, क्षेत्रफल विस्तार, तकनिकी भण्डारण एवं प्रसंस्करण गतिविधियो को बढावा देने की अति आवश्कता है।
- पंच गौरव कार्यक्रम के तहत प्रस्तावित कार्य हेतु 44 लाख रूपयें की आवश्यकता है ।

एक जिला– एक वनस्पति

तेन्दू

उपयोग :– तेन्दू की लकड़ी बल्ले, थूनी, मीनाकारी की हुई छड़िया, तस्वीरो की फ्रेम और श्रृगांरित वस्तुएं बनाने के काम आती है । जलते समय चिनगारियां फेकने के कारण तेन्दू की लकड़ी जलाने हेतु उपयुक्त नही है । इसके पत्ते बीडी बनाने के काम आते है । तेन्दू पत्तो की विशेष गन्ध, लोच, मोटी बनावट, सूखी अवस्था में भी गोलाई देने में आसानी और क्षयप्रतिरोधकता जैसे गुणों के कारण यह पत्तियों बीडी बनाने के लिए श्रेष्ठ है ।

पत्तिया :– बीडी बनाने हेतु उपयुक्त तेन्दू पत्ता बड़ी आकार का पतला और द्वितीयक शिरा विहीन होना चाहिये । इसके लिये तेन्दू की झाडियों की उचित समय पर कटाई–छटाई (कटाई–छटाई हेतु उपयुक्त समय फरवरी माह का अन्त या मार्च माह की शुरूआत) होनी चाहिये । 15 से.मी. से अधिक गोलाई के वृक्षों की लगभग एक मीटर उॅचाई पर कटाई तेन्दू पत्ते की उत्पादकता बढाती है जबकि छंटाई के फलस्वरूप बडी और पतली पत्तियॉ आती है । जलवायु पर निर्भर करते हुये कटाई के 30–60 दिन बाद और छटाई के 40–45 दिन बाद तेन्दू पत्ते तोडने के लिये उपलब्ध हो जाते है ।

दो से तीन बार गीला–सूखा विधि द्वारा तैयार बीजो से प्राप्त नतीजो का विवरण इस प्रकार है :–

प्रति कि.ग्रा. बीजो की संख्या	अंकुरण क्षमता	पौध प्रतिशत	अंकुरण अवधि (दिनों में)
1150	30–50	40	15–45

प्राकृतिक पुर्नजनन :– तेन्दु के बीज पक्षियों व जानवरो द्वारा फैलाये जाते है । प्राकृतिक स्थितियों में पुर्नजनन वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में शुरू होता है जो पूरी वर्षा ऋतु में जारी रहता है । मिट्टी से ढके बीज अकुंरण प्रक्रिया में बढोतरी करते है क्योकि ऐसी स्थिति में कीट–पंतगो आदि नुकसान की सम्भावना नही रहती है ।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया

प्रतापगढ़ वनमण्डल अधीन तेंदू के पेड़ को तैयार करने एवं संवर्धन हेतु कार्य किये जा रहे है। इसके साथ ही तेंदू पौधें की सहायक प्रजाति के रूप में सिरस, सागवान, सादड एवं बांस के पौधें तैयार किये जा रहे है। वित्तिय वर्ष 2024–25 में 1385275 पौधें तैयार किये जा रहे है। जिसमें से 5–10 प्रतिशत तेंदु एवं सहायक प्रजाति के पौधें तैयार किये जायेंगे।

- **कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रूपयें में)–**

2024–25 में पचं गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत 100.00 लाख रूपये की अनुमानित राशि है। जिसके अंतर्गत तेन्दू पत्ता के पौधों के संवर्धन हेतु 100.00 लाख का प्रस्ताव तैयार कर भिजवाया गया है।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत प्रस्तावित कार्य हेतु 100 लाख रूपयें की आवश्यकता है ।

एक जिला – एक उत्पाद

थेवा कला

- प्राचीन काल में कांठल प्रदेश के नाम से प्रचलित वर्तमान प्रतापगढ़ जिला साहित्य कला कौशल के लिए सदा से विख्यात रहा है। रंगीन काँच पर सोने की चित्रकारी जो कि बेल्जियम काँच पर बनाये अत्यंत बारीक एवं कठिन स्वर्ण चित्रांकन कला को स्थानीय बोली में थेवा कला कहते हैं।
- थेवा बनाने हेतु सबसे पहले सोने की 23 कैरेट की शीट पर उस आकार की चांदी का तार जिसे वादा कहते है, जोडा जाता है । फिर सोने की शीट औजार से नक्काशी की जाती है।जिसके पश्चात एक विधि द्वारा रंगीन कांच पर लगाया जाता हैं। तैयार कांच को चांदी से बने कवर में फिट(जडा) जाता है।इस पूरी प्रकिया के बाद थेवा उत्पाद तैयार होता है।
- प्रतापगढ़ में "राजसोनी परिवार" के सदस्य सैकड़ो वर्षो से इस कला में सिद्व हस्त रहे हैं।उन्नीसवीं सदी में विशप हैबर भारत यात्रा के लिये आया था, भारतीय कला कौशल देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया। अपने भ्रमण काल में वह प्रतापगढ़ भी आया उन्हें राजसोनी परिवार के पूर्वज कलाकार श्री नाथूजी राजसोनी ने थेवाकला के नमूने भी दिखाए। जिन्हें देखकर विशप हैबर दंग रह गया। उसने सन् 1828 में लंदन से प्रकाशित अपने ग्रंथ–"Narratives of a goivney through the upper provinces of India में इस थेवा कला का और नाथुजी के बनाए नमूनों की प्रशंसा करने हुए उल्लेख किया है किः– "Ornaments of gold, silver and enamel are to be procured here, I saw a necklace and bracelets of gold embossed with the twenty fo'avtars; Indian mythology " which were very curious and Prestley wrought..." मेजर के.डी.अस्किन आई.ए. ने अपने ग्रंथ "The Mewar Residency "vol II-A ds i`"B 211 में लिखा "The capital used to be famous for its gold and silver ornaments and its enameled work of gold in paid on emerald colored glass and engraved to represent hunting and mythological sciences, but the out turn is now very small, The art of making the enameled jewelry is said to be confined to about five families, ad the secrete is jewellery guarded..."
- प्रतापगढ़ नरेश ने भी अपने विदेशी खासकर अंग्रेज मेहमानों का इस थेवा चित्रकारी की कलात्मक वस्तुएं उपहार में दी। सन् 1939 में प्रतापगढ़ नरेश महारावत सामन्त सिंह ने इस कार्य से प्रभावित

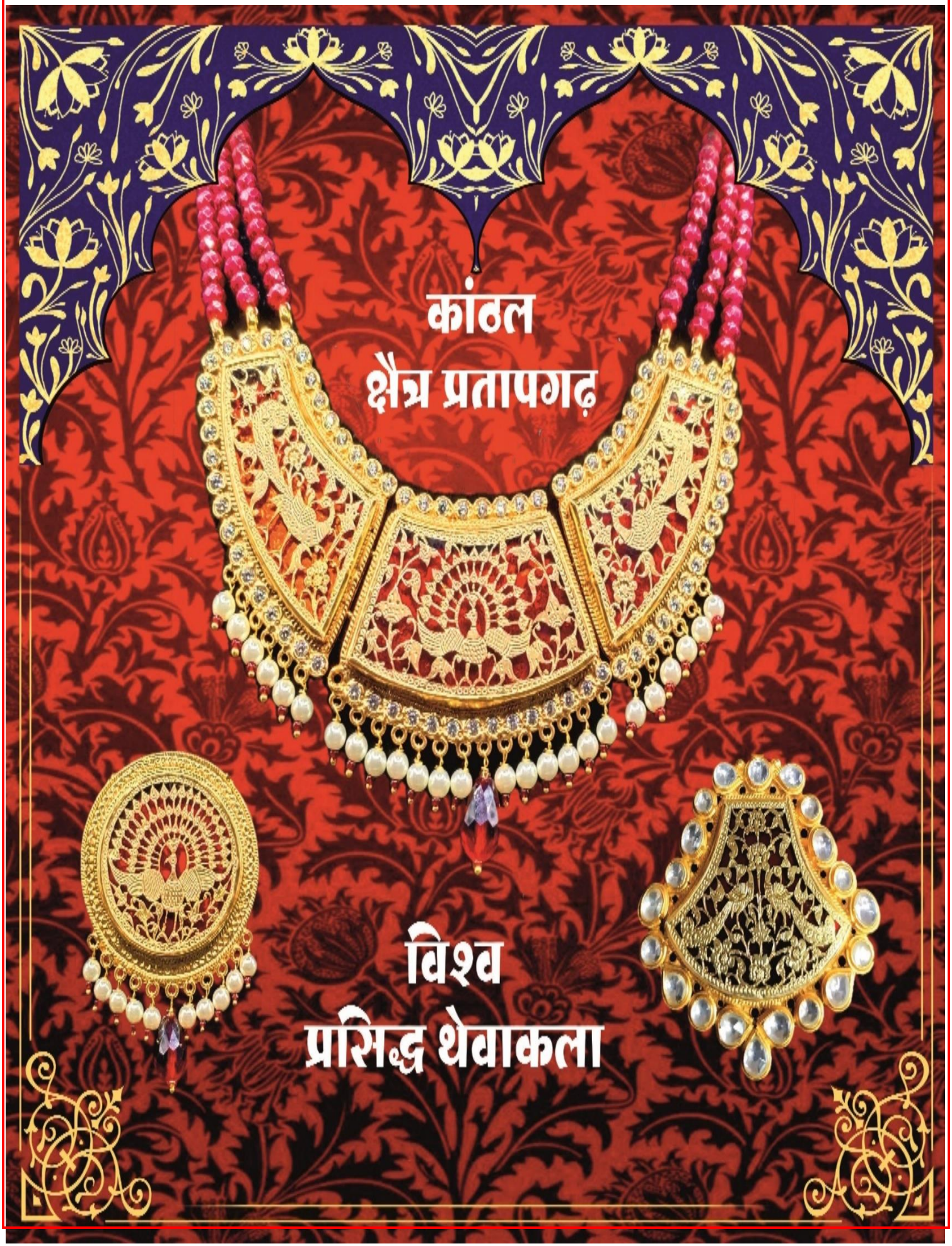
कांठल
क्षैत्र प्रतापगढ़
विश्व
प्रसिद्ध थेवाकला

देवास, अजमेर, उदयपुर ने भी इस कला को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया एवं अनेक प्रकार के प्रमाण पत्र देकर इस कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

- कालान्तर में काँच पर सोने की थेवा चित्रकारी से सुसज्जित कलात्मक वस्तुएं विदेशों में भी भेजी जाने लगी। समस्त भारतवर्ष में केवल प्रतापगढ़ (राज.) ही ऐसा नगर है जहां पर थेवा चित्रकारी होती है। लाल, हरा, आसमानी काँच पर यह काम होता है। इस कला के अन्तर्गत छोटी बडी कलात्मक वस्तुएं विविध प्रकार के स्वर्ण आभूषण ,कलात्मक बाक्स, प्लेट, पानदान, सिगरेट–केस, गुलदस्ता, पेंडल आदि सुंदर प्राचीन चित्रात्मक ढंग से बनाकर अपनी कुशलता को प्रदर्शित किया गया है।

लोकप्रियता के शीर्ष परः–

- भारत सरकार ने भी थेवा कला की महान कलाकृतियों की कलात्मकता को समझा है। पूरे देश में यह अनोखा उदाहरण होगा जहां एक नगर में राजसोनीपरिवार के सभी कलाकार राष्ट्रीय पुरूस्कार से सम्मानित किये गये है। हमारे राष्ट्रीय–हस्तशिल्प में थेवा कला आज भी सर्वोत्तम व सर्वोत्कृष्ट मानक स्तर रखती है। यह कला के अक्षुण्ण व अनुपम प्रमाण है।
- थेवा कला को जी आई टेग भी मिला हुआ है। भारत सरकार के साथ राज्य सरकार द्वारा भी समय–समय पर इन कलाकारों को पूरा प्रोत्साहन व धनराशि भी ईनाम के तौर पर मिलती रही है। असंख्य मेरिट प्रमाण–पत्र, एवार्ड, फोटोग्राफ इन कला साधकों का गौरव बुलन्द करते है। राजस्थान के राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक ने जयपुर में ईरान के शाह व उनकी पत्नी के सम्मान में आयोजित समारोह में शाह की पत्नी शाहबार्नों को प्रतापगढ़ की थेवा कला की एक मंजूशा (बॉक्स) भेंट की थी। भारत सरकार के उपक्रम सेन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड ने 29 जुलाई, 1981 को होने वाले ब्रिटेन के प्रिन्स चार्ल्स के विवाह में भेंट देने के लिए प्रतापगढ़ के राजसोनी परिवार के सदस्यों से थेवाकला का बॉक्स बनवाया था। यह कलात्मक बॉक्स 17 काँच के टुकड़ों द्वारा निर्मित था जिसके उपर भाग के कांच पर राजस्थानी शैली में बादशाह की हाथी पर सवारी, अंगरक्षक, सेना, घुड़सवार आदि के चित्र तथा बाक्स के दाँए–बाँए व आगे–पीछे शिकार के दृश्य अंकित किए गये थे। थेवाकला की यह बेमिसाल कलाकृति थी।

वस्त्र मंत्रालय विकास आयुक्त,(हस्तशिल्प) भारत सरकार द्वारा पुरूस्कृत प्रतापगढ राजस्थान के राष्ट्रीय पुरस्कार, शिल्पगुरू एवं पदमश्री प्राप्त थेवा कला के हस्तशिल्पी निम्नानुसार हैः–

राष्ट्रीय पुरस्कारः–

- श्री रामप्रसाद राजसोनी 1966–67
- श्री शंकरलाल राजसोनी 1969–70
- श्री बेनीराम राजसोनी 1971–72
- श्री रामविलास राजसोनी 1974–75
- श्री जगदीश राजसोनी 1976–77
- श्री बसंतलाल राजसोनी 1979–80

- श्री रामनिवास राजसोनी 1981–82
- श्री गिरीश राजसोनी 1998–99
- श्री महेश राजसोनी 2007–08
- श्री विजय राजसोनी 2016–17

शिल्पगुरू पुरूस्कार :–

- श्री जगदीश राजसोनी 2002–03

पदमश्री परूस्कार :–

- श्री महेश राजसोनी 2014–15

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया

- थेवा कला के उत्पादों के फोटो और वीडियो तैयार करवा कर सोशल मीडिया के माध्यम से मार्केटिंग करवाना
- प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से स्थानीय हस्तशिल्पियोंधविक्रेताओं को ईकॉमर्स के माध्यम से उनके थेवा उत्पादों के विपणन एवं निर्यात करने में निपुण करना।
- नए कारीगर विशेषकर महिलाओं को ट्रेनिंग के माध्यम से थेवा कारीगरी में कौशल बनाना।
- ब्रांडए लोगो एवं लेबलिंग के माध्यम से थेवा की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना।
- थेवा कला के कारीगरों का क्लस्टर तैयार करए उनके पारंपरिक कौशल को बाजार मांग से साथ जोड़ कर नए उत्पाद एवं आधुनिक डिजाइन तैयार करना।
- प्रस्तावित ट्राइबल प्रयटन सर्किट में थेवा कला को जोड़ना।

कार्ययोजना की क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय

- थेवा उत्पादों के फोटोए वीडियो तैयार कर उनका सोशल मीडिया के माध्यम प्रचार प्रसार 5.00 लाख
- ब्रांडए लोगो और लेबलिंग कार्य हेतु 2.00 लाख
- कॉफी टेबल बुकध्कैटलॉग तैयार करना 3.00 लाख
- ईकॉमर्स के माध्यम से विपणन हेतु ट्रेनिंग 5.00 लाख
- कौशल विकास एवं संवर्धन हेतु ट्रैनिंग 15.00 लाख।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रूपयें में)

इस प्रकार पंच गौरव कार्यक्रम से एक जिला एक उत्पाद के अंतर्गत थेवा कला पर अनुमानित 30.00 लाख की आवश्यकता है।

एक जिला – एक पर्यटन

सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण

- सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण जिले में स्थित एकमात्र वन्य जीव अभ्यारण है, जिसें राजस्थान सरकार द्वारा संरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया गया है । यह 422.95 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला एक घना जंगल है । जो जिले के कुल भूमि क्षेत्र का लगभग 40 प्रतिशत है । घने जंगलो वाला सीतामाता अभ्यारण अरावली पर्वतमाला और मालवा पठार पर फैला हुआ है । जहॉ मौसमी नदियॉ जाखम, करमोई, सीतामाता, बुधो और टंकिया जंगल से होकर बहती है जिसमे जाखम सबसे बडी नदी है । इसमे सालर, पीपल, बबुल, नीम,सीरस, चुरैल, कचनार, गुलमोहर, अमलतास, बकायन, अशोक, महुआ, गुंडी, खेजडी, कूमटा, आंवला, बांस, सिंदूर, चिरौंजी, रूद्राक्ष और बेल के पेड़ शामिल है ।
- यहॉ पाई जाने वाली उच्च मूल्य की औषधीय जडी–बूटियों की 108 किस्मों में सें 17 लुप्तप्राय हैं । इस क्षेत्र में बडभ संख्या में आवासीय और प्रवासी पक्षी पाए जाते है । लगभग 130 किस्मों में सें कुछ है बगुला, सफेद गर्दन वाला सारस, हरा कबूतर, लाल कछुआ, कबूतर, छोटा भूरा कबूतर, बुनकर पक्षी आदि । प्रतापगढ़ जिले के ब्लॉक धरियावद से 17 किमी दूर आरामपुरा जंगल में सूर्यास्त के आसपास उड़ने वाली गिलहरी को एक पेड से दूसरे पेड़ पर उडते देखा जा सकता है । उड़न गिलहरियों को देखने का सबसे अच्छा समय फरवरी और मार्च के बीच होता है । जब महुआ के ज्यादातर पेड़ अपनी पत्तियॉ गिरा देते है और पत्तों रहित पेडों की शाखाओं के बीच से गिलहरी को उडते हुए देखना आसान होता है ।

जिलावार वैधानिक स्थिति क्षेत्र

S. No.	District	Tehsil	Reserve Forest	Protected	Unclassed	Total
1.	Pratapgarh	Dhariyawad	6335.00	1491.00	-	7826.00
		Pratapgarh	19274.00	3670.70	-	22944.70
		Chottisadri	2791.90	-	-	2791.90
Sub Total			28400.90	5161.70	-	33562.60
2.	Chittorgarh	Barisadri	6782.40	1172.50	-	7954.90
3.	Udaipur	Lasadia	777.00	-	-	777.00
Total			35960.30	6334.20	-	42294.50

सीतामाता अभ्यारण भ्रमण के महत्तवपूर्ण स्थान

सीतामाता मन्दिर	–	देवी सीतामाता मन्दिर
भागी बावड़ी	–	स्थानीय व्यक्तियो का धार्मिक स्थल
वाल्मीकि आश्रम	–	वह स्थान जहॉ देवी सीतामाता ने अपने वनवास के दिन निकालें और औषधीय पौधों से भरी बारहमासी है
लाखिया भाटा	–	चट्टानो पर प्राचीन चिन्ह है ।
हनुमान मन्दिर	–	वह स्थान जहॉ लव एवं कुश ने हनुमान जी को रस्सी से बांधा था ।
जाखम बांध	–	साहसिक ट्रैकिंग , जल क्रीड़ा और चट्टान चढाई का स्थान सौंदर्य और जैव विविधता का स्थान
आरामपुरा पुर्नवास केन्द्र	–	उड़ने वाली गिलहरी, जंगली मुर्गी, तेंदुआ और चार सींग वाले मृग के लिए प्रसिद्ध है ।
खेर वेली और नागलिया	–	पक्षियों और मगरमच्छों से भरा एक मनोरम स्थान एवं जलीय पौधे
टंकीया	–	यह स्थान बारहमासी नाला पर स्थित है जिसमें जबरदस्त प्राकृतिक सुन्दरता है और पर्यटक आमतौर पर यहॉ आते है ।
मायडा वॉच टॉवर	–	यह वॉच टॉवर सीतामाता अभ्यारण के निकटवर्ती क्षेंत्र के ऊंचे स्थान पर स्थित है जिसमें पर्यटेकों को आम तौर पर इस स्थल पर आने में सुविधा होती है ।
अनोपपुरा तीराहा	–	प्राकृतिक सौंदर्य और बारहमासी जलधारा के लिए प्रसिद्ध है
गंगली कांकर वॉच टॉवर	–	प्राकृतिक सौंदर्य और बारहमासी जलधारा के लिए प्रसिद्ध है साथ ही आस पास के ऊंचे स्थान के लिए प्रसिद्ध
दमदम दरवाजा	–	सीतामाता अभ्यारण मुख्य प्रवेश द्वार

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया

- पर्यटकों की संख्या में अभिवृद्धि हेतु व्यापक प्रचार प्रसार करना
- सीतामाता अभ्यारण्य में पर्यटकों के सुलभ भ्रमण हेतु मोटरेबल ट्रैक एवं ट्रैकिंग पाथ उपलब्ध करवाना।
- पर्यटकों को वन्यजीवए पक्षियों को देखने के लिए वॉच टावर उपलब्ध करवाना।
- पर्यटकों को वन क्षेत्र में उपलब्ध वनस्पति एवं वन्यजीवों से संबंधित जानकारी हेतु साइनेज उपलब्ध करवाना।
- पर्यटकों की सुविधार्थ जन सुविधा उपलब्ध करवाना।अभ्यारण्य पहुंच सुगम करने हेतु सभी मुख्य सड़कों पर साइनेज लगवाना।
- पर्यटकों के रात्रि विश्राम हेतु गेस्ट हाउस का रेनोवेशन करवाना।
-

- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रूपयें में)–
    - **ट्रैकिंग पाथए ईको ट्रेल - 35 लाख**
    - **वॉच टावर, व्यू प्वाइंट, बर्ड वॉचिंग प्वाइंट -60 लाख**
    - **अभ्यारण्य के अंदर साइनेज - 20 लाख**
    - **प्रमुख मार्गों पर साइनेज -10 लाख**
    - **रेस्ट हाउस रेनोवेशन -25 लाख**
    - **प्रचार प्रसार हेतु फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी - 5 लाख**
    - **जनसुविधाओं का निर्माण, बेंच आदि - 20 लाख**

      पंच गौरव कार्यक्रम के तहत कुल प्रस्तावित व्यय 140 लाख रूपयें

एक जिला – एक खेल

तीरंदाजी

भारतीयों की प्राचीन परम्परा हैं तीरन्दाजी। प्राचीन भारत की युद्ध नीति के अन्दर धनुर्विद्या का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। आज दुनिया के करीब 80 देशों में तीरन्दाजी एक लोकप्रिय खेल हैं। सन् 1968 के ओलम्पिक खेलों में तीरन्दाजी (एकल) खेल को स्वीकृति मिली। इसमें वैयक्तिक और सांधिक दोनों प्रकारों में पदक दिए जाते हैं। भारतीय तीरन्दाजी संघ ने भारत के अन्दर परम्परागत तीरन्दाजी को इण्डियन राउण्ड आर्चरी खेल की स्वीकृ ति दी हैं। इसमें व्यक्तिगत एवं 4 खिलाडियों की टीम होती हैं।

- **मैदान** –

➢ खेल मैदान साफ, समतल जगह पर बनाना चाहिए।
➢ मैदान की दिशा हमेशा दक्षिण से उत्तर होनी चाहिए।
➢ मैदान का नाप – लम्बाई 90 मीटर, चौड़ाई 40 मीटर तक होनी चाहिए। टारगेट के पीछे 20 मीटर तक मैदान खाली होना चाहिए। चौडाई में टारगेट से 10 मीटर तक मैदान खाली होना चाहिए।

- **अधिकारी** –

➢ विचारक
➢ शूटिंग डारेक्टर
➢ गुणापत्रक (Target Caption) – Scorer(टार्गेट के अनुसार)

- **खेल सामग्री** –

➢ टार्गेट स्टैण्ड, बॉस, टार्गेट फेस।
➢ लाल, पीली झंडी, नम्बर बोर्ड, बैक नम्बर, पिन्स, लोहे का प्लास।
➢ चूना, टेप, रस्सी, सीटी।
➢ लेखन सामग्री क्लिप बोर्ड

➢ स्कोर शीट, गुणपत्रक

- **टार्गेट बॉस** – यह घास का बना होता है। इसका नाप 125 से 130 सेमी. होता हैं।
- **टार्गेट स्टेण्ड** – लकडी का बना होता हैं। इसकी उचाई 5 1/2 फीट होनी चाहिए। स्टैण्ड जमीन पर 15^0 पीछे झुका होना चाहिए।
- **टार्गेट फेस** – फेस दो प्रकार के होते हैं – 80 सेमी एवं 122 सेमी टार्गेट फेस में कुल पॉच रंग होते हैं – पीला, लाल आसमानी, काला एवं सफेद। एक रंग में दो लाइने होती हैं।

- **इण्डियन राउण्ड के खिलाडी**

गुट (आयु वर्ग)		दूरी	टार्गेट फेस	योग्यता
1.	15 साल के नीचे	30 मी./ 20 मी.	122 सेमी/80 सेमी	100/720
2.	18 साल के नीचे	40 मी./ 30 मी.	122 सेमी/80 सेमी	125/720
3.	30 साल के नीचे	50 मी./ 30 मी.	122 सेमी/80 सेमी	150/720

खेल के नियम

➢ प्रत्येक तीरन्दाज के पास 6 से 8 तीर होने चाहिए।
➢ एक बार में 2 मिनट के अन्दर 3 तीर चलाना हैं।
➢ कोई भी तीर टार्गेट फेस पर लटक जायेगा तो वह दूसरा तीर नहीं चलायेगा एवं विचारक (जज) को झण्डा दिखाकर बुलायेगा और उसका स्कोर लिखने के बाद दूसरा तीर चलायेगा और उस तीर को टार्गेट से नीचे रखेगा।
➢ कोई तीर टार्गेट छेद करते हुए निकल जाता है तो तीरन्दाज को झण्डा दिखाकर विचारक को बुलाना चाहिए एवं उसका स्कोर लिखने के बाद दूसरा तीर चलाना चाहिए।
➢ कोई भी तीर डिवाइडिंग लाईन पर लगेगा तो ज्यादा वाले नम्बर मिलेगें।
➢ 2 सीटी में तीरन्दाज धनुष–बाण सहित शूटिंग लाइन पर आ जायेगा।
➢ 1 सीटी में शुटिंग चालू हो जायेगी। जो समय के अनुसार बजेगी।
➢ 3 सीटी में तीरन्दाज शूटिंग बन्द करके अपने तीर लेने जायेगा। उसी के साथ स्कोरिंग होगी। यही क्रम लगातार जारी रहेगा।

➢ तीरन्दाजी आदिवासियों का प्रमुख खेल था इसमें कांठल कोरवागढ़ के प्रमुख तीरन्दाज ओलपियन अर्जुन अवार्ड श्री श्यामलाल जी ओलंपियन श्री लिम्बाराम जी, श्री धूलचन्द डामोर, श्री धनेश्वर जी, श्री नरेश जी डामोर, श्री सुरेश जी कडिया, श्री वकील राज डिंडोर, श्री विश्राम रावत आदि अंतरराष्ट्रीय खिलाडी रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर मेडल जितने वाले खिलाडी बद्रीलाल मीणा, मुकेश निनामा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनियुक्त किया। नानका मीणा, शंकरलाल डामोर, पारस निनामा, सुरज मीणा, कमलेश मीणा, दीपक मीणा, विकास मीणा राष्ट्रीय स्तर एवं ईश्वर मीणा, अजय मीणा, नितेश मीणा, प्रभुलाल पारगी

अभिषेक निनामा, कपिल डामोर, कमलेश नाथ, राहुल मीणा, मनीष मीणा, राजकुमार मीणा, कुलदीप मीणा, महेन्द्र मीणा आदि खिलाडियों ने राज्य पर भाग लिया हैं।

प्रतापगढ़ जिले में आर्चरी का भविष्य

- प्रतापगढ़ जिले में जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20.11.2024 से 21.11.2024 को किया गया जिसमें जिला कलक्टर महोदया श्रीमती अंजली राजोरिया प्रतापगढ़ एवं जिला पुलिस अधीक्षक श्री विनित कुमार बंसल प्रतापगढ़ एवं जिला खेल अधिकारी डॉ. हिमांशु राजोरा, द्वारा उद्घाटन किया गया –
    - जिसमें विजेता निम्नानुसार रहे –
        - प्रथम – अभिषेक मीणा
        - द्वितीय –कपील डामोर
        - तृतीय –महेन्द्र मीणा

- इसके पश्चात विजेता खिलाडियों द्वारा जिला स्तरीय से राज्य स्तरीय प्रतियोगिता उदयपुर में विभिन्न खेलों में प्रतापगढ़ जिले के 174 बालक/बालिकाओं ने खिलाडियों भाग लिया जो कि दिनांक 25.

11.2024 से 27.11.2024 आयोजित किया गया। सभी 174 खिलाडी तथा 15 दल प्रशिक्षकों सभी को खेल विभाग द्वारा खेल कीट प्रदान किये गए। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतापगढ़ जिले के खिलाडियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।

- सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर प्रतापगढ़ जिले में सभी विभाग को द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई थी जिसमें जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र प्रतापगढ़ द्वारा भी एक जिला–एक खेल/ पंच गौरव के तहत चयनित खेल तीरन्दाजी के उपकरणों की भी प्रदर्शनी लगाई गई प्रदर्शनी में आने वाले सभी गणमान्य एवं नागरिकों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एवं भारतीय स्तर के धनुष से तीर चलाकर अपनी खुशी व्यक्त की एवं खेल के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त की। जिसमें प्रतापगढ़ खेल विभाग से तीरन्दाजी प्रदर्शनी लगाई थी एवं डॉ हिमांशु राजोरा ने खेल गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की एवं खेलों के महत्व का समझाया।

सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर प्रतापगढ़ जिले दिनांक 12.12.2024 से 17.12.2024 तक आयोजित किया गया

खेलों इण्डिया

प्रतापगढ जिले में खेलों इण्डिया के तहत चयनित तीरन्दाजी खेलों इण्डिया सेंटर

- प्रतापगढ़ में नियम खेलों इण्डिया स्थापित हैं जिसमें 30 खिलाडी प्रशिक्षण ले रहे हैं जिनको बद्रीलाल मीणा प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता हैं। नियमित सुबह–शाम को खेलों इण्डिया सेन्टर पर प्रशिक्षण दिया जाता हैं।
- तीरन्दाजी खेलों इण्डिया सेन्टर प्रतापगढ़ द्वारा विभिन्न खिलाडियों ने राज्य स्तर अजमेर में आयोजित पर भाग लिया – अभिषेक निनामा, कपील डामोर, कमलेश नाथ, राहुल मीणा, मनीष मीणा, राजकुमार मीणा, कुलदीप मीणा, महेन्द्र मीणा

- उक्त कार्यक्रम में माननीय मुख्य अतिथि माननीय प्रेमचन्द बेरवा उपमुख्यमंत्री राजस्थान सरकार के साथ जिला कलक्टर महोदय, जिला प्रतापगढ़ एवं जिला पुलिस अधीक्षक, जिला प्रतापगढ़ भी शामिल हुये थे।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया–

- तिरंदाजी खेल हेतु सुटिंग रेंज 70 मीटर
- तिरंदाजी उपकरण

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रूपयें में)–

- तिरंदाजी खेल हेतु सुटिंग रेंज 70 मीटर – 90 लाख
- तिरंदाजी उपकरण – 10 लाख
- पंच गौरव कार्यक्रम के तहत कुल प्रस्तावित व्यय 100 लाख रूपयें की आवश्यकता है

वित्तीय प्रस्ताव एवं विस्तृत कार्ययोजना

जिले के चिन्हित पंच–गौरव से संबंधित कार्यो/परियोजना के प्रस्ताव मय विवरण

पंच गौरव		विभाग द्वारा प्राप्त प्रस्ताव	राशि लाखों में	कुल योग अनुमानित राशि (लाखों में)
उपज	कलोंजी	फसल का विस्तार , प्रसार–प्रचार के साथ तकनीकि फसल उत्पादन हेतु	44.00	44.00
वनस्पति प्रजाति	तेंदू	तेन्दू की 20 ईकाईयो के संवर्धन एवं अन्य कार्यो हेतु	100.00	100.00
पर्यटन स्थल	सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण	धरियावद रेंज	74.50	287.50
		बडीसादडी रेंज	68.00	
		जाखम रेंज	141.00	
		कॉफी टेबल बुक एवं सम्पूर्ण अभ्यारण क्षेत्र की ड्रॉन वीडियोग्राफी एवं फॉटोग्राफी कार्य	4.00	
खेल	तीरंदाजी	तीरंदाजी शुटींग रेंज	90.00	100.00
		तीरंदाजी उपकरण	10.00	
जिले के चिन्हित पंच गौरव के प्रोत्साहन एवं प्रचार प्रसार हेतु लघु विडियो फिल्म एवं कॉफी टेबल बुक कार्य				15.00
महायोग				546.50